इब्राहिम लोदी (1517-26 ई०):

सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र इब्राहिम लोदी को 22 नवम्बर, 1517 ई० को आगरा की गद्दी पर बैठाया गया। सरदारों के एक दल ने उसके छोटे भाई जलाल खाँ को जौनपुर की गद्दी पर बैठा दिया। परन्तु इब्राहिम ने उसकी हत्या करवा दी। 29 दिसम्बर, 1517 को इब्राहिम ने दूसरा राज्याभिषेक मनाया।

जलाल खाँ के विरुद्ध अपने अभियान के दौरान इब्राहिम ने मानगाँव के राजपूतों तथा जरतौली के राजपूत जमींदारों के विद्रोहों को दबा दिया। अंतिम रूप से ग्वालियर पर 1518 ई० में अधिकार कर लिया गया।

बल एवं कार्यक्षमता पाने के उद्देश्य से उसने लोहानी, फरमूली एवं लोदी जातियों के शक्तिशाली अमीरों के प्रति दमन की नीति अपनायी। अतः सरदारों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करना शुरू कर दिया। दौलत खाँ (लोदी) तथा सुल्तान इब्राहिम के चाचा एवं दिल्ली की गद्दी के दावेदारों में आलम खाँ ने काबुल के तैमूरवंशीय शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।

1526 ई० में पानीपत की प्रथम लड़ाई में बाबर ने सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के स्थान पर मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।

लोदी राजत्व :

1451 ई० में अफगान कबायली मूल के बहलोल लोदी द्वारा एक नये वंश की स्थापना के साथ परंपरागत राजत्व के सिद्धांत में कुछ नये तत्वों का समावेश हुआ। लोदी शासकों का राजत्व तत्कालीन परिस्थितियों तथा कबायली परंपरा से प्रभावित था। इनकी परंपराओं में निरंकुश राजतंत्र का कोई स्थान नहीं

Continue...

था। बहलोल लोदी के शासन में सत्ता में साझेदारी की अफगान परंपरा ने विकेंद्रीकरण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन दिया। हालांकि उसके उत्तराधिकारीयों —

① सिकंदर लोदी,
② इब्राहिम लोदी,

ने अमीर वर्ग पर नियंत्रण द्वारा राजत्व को पुनः तुर्की आदर्श के समीप लाने का प्रयास किया।

Continue.....

Dr. Madan Paswan — History.